# नाट्य साहित्य में प्रकृति के सौन्दर्य का विवेचन

**रिचा माथुर,** शोध–छात्रा, डॉ0 रा0म0लो0 अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
**प्रो0 (डॉ0) अभिषेकदत्त त्रिपाठी,** अध्यक्ष–संस्कृत विभाग, का0सु0 साकेत पी0जी0 कॉलेज, अयोध्या
**https://doi.org/10.61410/had.v19i1.167**

धर्म और जीवन का सम्बन्ध अनादि काल में चला आ रहा है और नाटक जीवन की दृश्याभिव्यक्ति है। अपनी आरंम्भिक अवस्था से ही नाटक की प्रकृति लोकरंजन, लोकशिक्षण और लोकरक्षण की रही है। नाटक की उत्पत्ति मनुष्य के आत्मविस्तार और सहकार की भावना की अभिव्यक्ति का प्रतिफलन है। संस्कृत नाटक रस प्रधान होते है, नाटक एक तरह का काव्य है 'काव्येषु नाटक रम्यम्' कहकर इसकी विशिष्टता ही रेखांकित की गई है।

आचार्य 'भरत' ने नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय में नाट्य को तीनों लोकों के विशाल भावों का अनुकीर्तन कहा है तथा इसे सार्ववर्णिक 'पंचम वेद' बताया है। संस्कृत नाट्यसाहित्य का विकास वैदिककाल से ही प्रारंभ हो गया था, वेदों में नाटक के तत्व मौजूद थे, पुराणकाल में भी नाट्यकला के रूपों का संकेत मिलता है। रामायण और महाभारत में तो नाटक के विकसित रूपों की तलाश की जा सकती है संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में अभिनय और संवाद के प्रमाण मिलते है। नाटकों की उत्पत्ति भारत में हुई तथा वह वैदिककाल से ही विकसित होता हुआ अपने उन्नत स्वरूप को प्राप्त हुआ। नाटक एक ऐसा सांस्कृतिक कर्म है, जिसमें जनजीवन के सभी पक्षों का सन्निवेश हो जाता है इसमें कहीं धर्म, कहीं क्रीडा, कहीं अर्थ, कहीं श्रम, कहीं हास्य, कहीं युद्ध, कहीं काम, कहीं वध, और कहीं प्रकृति का सजीव चित्रण का अनुकरण है यह नाट्यकारों को साहस, वीरों को उत्साह, अज्ञानी को ज्ञान और ज्ञानियों को विवेक प्रदान करता है यह धनिकों के लिए विलास, दुखियों के लिये स्थैर्य, अर्थाश्रितों के लिए अर्थ तथा विकलचित व्यक्तियों के लिए धीरज देने वाला है।

नाट्यकला जनजीवन के अधिक निकट है, नाट्य ही एक ऐसी कला है जिसमें सभी की रूचि संभव है नाटक में सब कुछ प्रत्यक्ष होने के कारण मूर्तता अधिक है बोधगम्यता अधिक है नाटक का क्षेत्र व्यापक है। नाट्य – रचना एक सांस्कृतिक कर्म है, इसीलिए किसी नाटक का मंचन देखते हुए या उसे पढ़ते हुए, उस नाटक में सन्निहित देशकाल का सांस्कृतिक जीवन मूर्त हो उठता है। नाटक में जीवन की वास्तविकता, सौन्दर्य–विधायिनी कल्पना के रंगों से पूर्ण होकर रंगमंच पर अवतरित होती है–जिससे उसमें जीवन की झलक मिलती है।

नाटक की उत्पत्ति नट् धातु से हुई है, जिसका स्वाभाविक सन्दर्भ अभिनय से जुड़ा हुआ है और अभिनय एक कला भी है और एक मनोवृत्ति भी। अभिनय जीवन का अंग है क्योंकि यह संसार स्वयं एक रंगमंच है जिस पर मनुष्य को परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न भूमिकाओं में उतरना होता है। अभिनय का सम्बंध अनुकरण से है। जहाँ तक नाटक की कथावस्तु का संम्बंध है, नाटक के कथानक में निरन्तरता और प्रवाह मानता होनी चाहिये।

संस्कृत नाट्य–साहित्य में सभी नाटककारों ने अपने नाटक में प्रकृति का बड़ा ही मनोहर चित्रण किया है। प्रकृति व्यापकतम अर्थ में प्राकृतिक, भौतिक या पदार्थिक जगत या ब्रहमाण्ड है। 'प्रकृति का संदर्भ' भौतिक जगत के दृगविषय से हो सकता है संस्कृत नाट्य – साहित्य में प्रकृति के मानवीकरण के आद्वितीय उदाहरण है।

'संस्कृत के महान महाकवि 'कालिदास' ने अपने नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में प्रकृति का अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है महाकवि कालिदास प्रकृति के कुशल चितेरे है इन्होंने इस नाटक में प्रकृति के कई रूपों का वर्णन किया है कालिदास ने सजीव प्रकृति, निर्जीव प्रकृति, विशुद्ध प्रकृति, आलम्बनरूपा प्रकृति, उद्दीपनरूपा प्रकृति, मानव सौन्दर्य

मापिका, मानवव्यवहारात्मिका प्रकृति, मानवभावसंवेधा प्रकृति का उदाहरण अभिज्ञानशाकुन्तल में दिया है।

'अभिज्ञानशाकुन्तल' में प्रकृति को एक मानव जीवन सहचरी के रूप में प्रदर्शित किया है जो अपने में स्वतः ही विशिष्ट है। कवि कालिदास ने अपना कथानक प्रकृति के सुरम्य वातावरण से किया है। राजा शिकार करते समय मृग का पीछा कर रहे है तब मृग शिकारी को देख अत्यन्त भयभीत है, मुड़ – मुड़ कर देख लेता है और अपनी गति तेज कर देता है कितना स्वाभाविक वर्णन है –

**"ग्रीवाभङ्गभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने बद्धदृष्टिः ,**
**पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयाद भूयसा पूर्वकायम्।**
**दर्भैर्रर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्या**
**पश्योदग्रप्लुतत्वाद् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्या प्रयति।।"**

कवि ने शकुन्तला के सौन्दर्य को मापने के लिए प्रकृति का सहारा लिया है शकुन्तला के रूप वर्णन में महाकवि कालिदास लिखते है –

**"सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं, मलिनमपिहिमांशोर्लक्ष्मंलक्ष्मी तनोति।**
**इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी, किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।"**

कवि ने नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल की नायिका के रूप सौन्दर्य तथा शरीर के अंगों की तुलना प्रकृति से की है। यहाँ पर कहा है कि –

**"अधरः किसलयरागः कोमल विटपानुकारिणौ बाहू ।**
**कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्।।"**

इस शकुन्तला के ओष्ठ किसलयराग की लालिमा वाले है , भुजायें कोमल शाखा की तरह सदृश है। शकुन्तला का यौवन पुष्प की तरह आकर्षक अंगों में समा गया है।

चतुर्थ अंक में कण्वाश्रम के वृक्ष, शकुन्तला की विदाई के समय मनुष्यों की भाँति महावर,, वस्त्र तथा आभूषण प्रदान कर रहें है।

**"क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डुतरूणा माङ्गल्यमाविष्कृतम् ,**
**निष्ठूयतश्चरणो पभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित् ।**
**अन्येभ्यो वनदेवता करतलैपरापर्वभागोत्थितै**
**र्दतान्याभरणाणि तत्किसलयोद्भेद प्रतिद्वन्द्विभि ।।"**

अभिज्ञानशाकुन्तल के इसी चतुर्थ अंक में प्रकृति को मानव सुलभ सुख–दुःख तथा दया करूणा आदि भावों को समझने वाला प्रस्तुत किया है उनका मानना है कि प्रकृति भी मनुष्य के समान ही सुख–दुःख का अनुभव करती है जब शकुन्तला हस्तिनापुर पतिगृह को जा रही है तब उसके जाने का दुख सभी आश्रम वासी को तो है ही साथ में हिरण – शावकों ने कुश ग्रासों को दुःख के कारण उगल दिया है, मोरों ने नाचना छोड़ दिया है यही नहीं निर्जीव–प्रकृति भी दुःख में अपने पीले पत्तों को गिराकर आँसू बहा रही है। –

**उद्गलितदर्भकवलामृगी परित्यक्त नतेना मयूराः ।**
**अपसृतपाण्डुपत्राः मुख्यचन्त्यश्रूणीव लताः ।।"**

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' प्रकृति की दृष्टि से देखा जाए तो यह नाटक बहुत महत्व रखता है महाकवि ने प्रकृति और जड़ पदार्थों का मानवीकरण बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है। तपोवन के वृक्ष, लताएँ, पशु–पक्षी सभी मानवीय संवेदनाओं से ओत–प्रोत है।

कवि कालिदास ने अपनी रचना कुमारसम्भव में प्रकृति को एक शिक्षिका के रूप में दर्शाया है। हिमालय पर्वत गुफा रूपी मुख से बाँसों के छिद्रों को भरता हुआ मधुर ध्वनि उत्पन्न कर रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह किन्नरों को तान की शिक्षा दे रहा हो !

**" स पूरयन् कीचकरन्ध्रमागान्, दरीमुखोत्थेन समीरणेन।**
**उद्गास्यतामिच्छति किन्नराणां, तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम् ।।"**

महाकवि कालिदास प्रकृति के उपासक है वे प्रकृति के अनंत–प्रेमी है इन्होंने समस्त नाटकों एवं काव्यों में प्रकृति का सुन्दर निरूपण तो किया ही है परन्तु कालिदास ने अपनी रचना ऋतुसंहार में प्रकृति का वर्णन स्वतंत्र रूप से किया है इन्होनें केवल प्रकृति के चित्रण के लिए ही ऋतुसंहार लिखा। ऋतुसंहार में कवि कालिदास ने ग्रीष्म ऋतु का बड़ा ही अद्भुत सजीव वर्णन किया है –

**" प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः सदावगाहक्षतवारिसचयः।**
**दिनांताम्योस्भ्युपशांतमन्मथों निदाद्यकालोस्यमुपागतः प्रिये ।।"**

वहीं कालिदास ने 'मालविकाग्निमित्रम्' में भी प्राकृतिक सौन्दर्य का बड़ी सहजता से वर्णन किया है कवि ने प्रमदवन में मालविका–अग्निमित्र के मिलन के अवसर पर प्रकृति के मनोहारी रूप का चित्रण किया है। पेड़–पौधों, लता, मोर, पक्षी, तड़ाग आदि का वर्णन कवि का प्रकृति से प्रेम दर्शाता है।

प्रकृति का अनोखा वर्णन करते हुए महाकवि भास ने अपने नाटक 'स्वप्नवासवदत्तम्' में अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का समन्वय भी प्रस्तुत किया है। प्रकृति वर्णन में 'भास' ने प्रसादगुण का विशेषतया उपयोग किया है। सूर्यास्त का कितना सजीव वर्णन 'स्वप्नवासवदत्ता' में प्राप्त होता है –

**" खगा वासोपेताः सलिलमवगाढो मुनिजनः**
**प्रदीप्तोऽग्निर्भाति प्रविचरतिं घूमो मुनिवनम् ।**
**परिभ्रष्टो दूरात रविरपि च संक्षिप्तकिरणो**
**रथं व्यावर्त्यासौ प्रविशति शनैरस्तशिखरम्।।"**

दण्डि ने भी सूर्योदय, सूर्यास्त, वसन्त ऋतु, निर्जन वन, राजप्रासाद, राजमार्ग और शमशान का भी वर्णन किया है। महाकवि दण्डी का प्रकृति वर्णन सुन्दर और अलंकृत होने पर भी संक्षिप्त और प्रवाहपूर्ण है। इनके वर्णनों में समासबहुला गौड़ी का प्रयोग उल्लेखनीय है। कवि की कल्पना तथा सूक्ष्म–निरीक्षण–शक्ति का दर्शन होता है। वसन्त का वर्णन करते हुए लिखा है –

**" अथ कदाचिदायासितजायारहितचेतसि, लालसालिङयन ग्लानघन केसरे ..... शालीनकन्यकान्तः करण संक्रान्त रागलंघित लज्जे ..... नृत्य लीले काले .....।"**

विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस नाटक के तृतीय अंक में 'शरद–महोत्सव' का वर्णन करते हुए कवि ने शरद ऋतु का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। शरद ऋतु की तुलना कवि विशाखदत्त ने भगवान शिव के शरीर से की है, इसमें काश–पुष्पों की सफेदी, शुभचन्द्र ज्योत्स्ना और राजहंसों की श्री विधमान है : –

**" आकाशं, काशपुष्पच्छविमभिभवता भस्मना शुक्लयन्तीः**
**शीतांशोरंशुजालैर्जलधरमलिनां क्लिन्दती कृतिमैभीम्।**
**कापालीमुद्वहन्ती स्त्रजमिव धवलां कौमुदीमित्यपूर्वा**
**हासश्रीराजहंसा हरतु तनुरिव क्लेशमैशी शरद वः ।।"**

कवि विशाखदत्त अन्तः प्रकृति और बाहत प्रकृति का समन्वय स्थापित करते है। कवि राक्षस के हृदय की भावनाओं का वर्णन करते समय बाहय प्रकृति का भी चित्रण किया है। कवि ने राक्षस के सन्तप्त हृदय की जीर्ण उपवन से तुलना कर अन्तः प्रकृति और बाहत प्रकृति का समन्वय किया ।

**" विपर्यस्तं सौधं कुलमिव महारम्भचरनं**
**सरः शुष्कं साधोर्हृदयमिव नाशेन सुहृदः।**
**फलैर्हीना वृक्षा विगुणविधियोगादिव नयास्तृणै**
**श्छन्ना भूमिर्मतिरिव कुनीत्या हमविदुषः।।"**

नाटककार शूद्रक ने भी मृच्छकटिकम् के पाँचवें अंक में प्रकृति का मनोहारी चित्रण किया है कवि शूद्रक ने इस प्रकरण में वर्षा ऋतु का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है कवि शूद्रक ने बताया है कि कीचड़ से सने हुए, वर्षा के जल से ताड़ित मेंढक जल पी रहे है, कामातुर मोर मधुर ध्वनि कर रहे है, कदम्ब के वृक्ष दीपक के समान शोभित हो रहें है, नीच कुल की स्त्री के समान बिजली एक स्थान पर नहीं ठहरती है। अन्यत्र बादल नवीन धनाढय व्यक्ति के तुल्य नित नये रूप दिखा रहे है। कभी ऊपर उठता है तो कभी नीचे झुकता है कभी गरजता है तो कभी बरसता है और कभी अन्धकार फैलाये हुए है –

**उन्नमति नमति वर्षति गर्जति मेघः करोति तिमिरौधम् ।**
**प्रथमश्रीरिव पुरूषः करोति रूपाण्यनेकानि।।"**

भवभूति भी अन्य कवियों की तरह प्रकृति का सौन्दर्यात्मक वर्णन से अछूते नहीं रह सके। उन्होंने 'मालतीमाधवम' में प्रकृति चित्रण किया है। वस्तुतः प्रत्येक मानव जन्म से प्रकृति का सान्निध्य, संरक्षण पाता है अतः एक क्षण के लिए भी वह प्रकृति को भुला नहीं पाता है , सूर्य के उदय होने पर कमल खिलता है और चन्द्रोदय होने पर चन्द्रकान्त मणि पिघलती है –

**"व्यतिषजति पदार्थानान्तरः–कोऽपि हेतु –**
**र्न खलु बहिरूपाधीन् प्रीतयः संश्रयन्ते ।**
**विकसति हि पतङ्मस्योदये पुण्डरीकं**
**द्रवति च हिमरश्मावुद्गते चन्द्रकान्तः।।"**

भवभूति ,'महावीरचरितम्' में भी प्रकृति का वर्णन करते हुए लिखते है कि श्री राम, सीता और लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष के लिए वनवास गए, वहाँ वन, उपवन, नदी, पर्वत, आश्रम आदि पर भ्रमण किया। कवि इसका अति स्वभाविक चित्रण करते है। वृक्ष, लता, पशु–पक्षी सभी सीता के भाई–बहन सदृश थे। दण्डकारण्य का वर्णन करते हुए भयानकता का आधान किया है। पुष्पक विमान पर बैठकर लंका से अयोध्या लौटते समय ऊपर से दिखायी देने वाले समुद्र, समुद्र–जीव, आश्रम, पर्वत, नदी का भवभूति ने सूक्ष्म अवलोकन के साथ वर्णन किया, अतः कहा जाता है कि भवभूति के प्रकृति–चित्रण में स्वाभाविकता देखने को मिलती है।

'प्रसन्नराघवम्' नाटक में कवि 'जयदेव' ने राजा जनक की वाटिका का सुन्दर वर्णन किया। पेड़, लता, फल, फूल, भ्रमर, मकरन्द आदि का अति मनोहारी चित्रण किया है इसी प्रकार वन–वन घूमते हुए राम–लक्ष्मण सीता का वृत्तान्त बताते हुए जयदेव ने प्रकृति का सजीव वर्णन किया है प्रभात और चन्द्रोदय का वर्णन प्रतिभापूर्ण है कवि ने पंचम अंक में गंगा, यमुना, सरयू आदि नदियों के संवाद प्रस्तुत कर कवि ने प्रकृति का मानवीकरण रूप में वर्णन किया है।

'सुबन्धु' ने वासवदत्ता में प्रकृति वर्णन में प्रभात वर्णन और वर्षा वर्णन विशेष उल्लेखनीय है। वर्षा के बारे में सुन्दर उत्प्रेक्षाओं का संकलन है। बादल रूपी लकड़ी पर बिजली रूपी, आरा चलने से बुरादारूपी जलकण शोभित होते है। ओले मानो जैसे दिग्वधू के टूटे हुए हार के मोती हों।

इन महान नाट्य–कारों के साथ–साथ दिङ्नाग ने अपने नाटक 'कुन्दमाला' में प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन किया, भट्टनारायण ने वेणीसंहार में तथा बिल्हण ने कर्णसुन्दरी नाटिका, राजशेखर ने कर्पूरमंजरी में, हर्षवर्धन ने प्रियदर्शिका में, रत्नावली नाटिका में, भवभूति ने उत्तररामचरितम् में एवं कालिदास ने विक्रमोमर्वशीयम् में प्रकृति का अद्भुत व चेतनास्वरूप, सजीव, सुन्दर चित्रण किया है। संस्कृत नाट्यसाहित्य के कवियों का प्रकृति वर्णन अत्यन्त प्रभावक, सरस, सरल, कमनीय तथा

सूक्ष्मेक्षिका शक्ति से पूर्ण है यह सभी नाट्यकार वस्तुतः प्रकृति के कवि है। सभी नाट्यकार कवियों के नाटक के पात्र प्रकृति की गोद में क्रीड़ा करने वाले है। उन्होंने उसे आलम्बन रूप में उददीपन रूप में चित्रित किया है कवि के प्रकृति का निर्जीव वर्णन, सजीव वर्णन दर्शाया है। नाटकों में मानव व्यवहारात्मिका प्रकृति, मानव भावसंवेधा प्रकृति, शिक्षिका रूपा प्रकृति के भी उदाहरण कवियों ने दिया है, नाटकों में कहीं पर तो प्रकृति के कमनीय रूप का बड़ा ही सुन्दर वर्णन हुआ है, मानव सौन्दर्यमापिका के रूप में भी प्रकृति का उपयोग ज्यादातर कवि ने किया है। उपर्युक्त रूपों के अतिरिक्त नाट्यकारों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति को कई रूपों में यथावसर प्रयुक्त किया है। नाट्यकवि की दृष्टि में तो प्रकृति सौन्दर्य और मानव सौन्दर्य की मापक है तो कहीं तादात्म्य है।

इस प्रकार हम पाते है कि सम्पूर्ण नाट्य–साहित्य में प्रकृति वर्णन, कथानक के उपयोग के लिए है। कथानक का उपयोग उसके लिए नहीं हुआ है दूसरा वैशिष्य है कि प्रकृति एक पात्र के रूप में कवि द्वारा प्रयुक्त हुई है जिसमें कवि का लक्ष्य प्रकृति का वर्णन कदापि दिखाई नहीं देता है। प्रकृति वर्णन रस उत्पत्ति का साधक है बाधक नहीं बना है क्षण–क्षण में नवीनता का आधान करने वाली प्रकृति में जो माधुर्य, सौन्दर्य है, सजीवता है वैसा किसी और में नहीं है। यह बहुत ही अद्भुत और सुन्दर होती है। प्रकृति की रक्षा करना हमारा परम् कर्त्तव्य है। जिससे इसकी सुन्दरता भविष्य में बनी रहें !

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–**


- डॉ0 एच0 एन0 यादव – नाट्यशास्त्रम् भरतमुनिप्रणीतम्
- डॉ0 कपिल देव द्विवेदी – अभिज्ञान शाकुन्तलम् कालिदास प्रणीतम्
- डॉ0 मुरारीलाल अग्रवाल – कुमारसम्भवम् कालीदास प्रणीतम्
- शिवप्रसाद द्विवेदी – ऋतुसंहारम कालीदास प्रणीतम्
- डॉ0 रमाशंकर पाण्डेय – मालविकाग्निमित्रम् कालिदास प्रणीतम्
- डॉ0 प्रीतिप्रभा गोयल, डॉ0 कीति भूषण ! – स्वप्नवासवदत्तम् भासप्रणीतम्
- परमेश्वरदीन पाण्डेय – मुद्राराक्षसमः–विशाखदत्त विरचित
- डॉ0 श्रीनिवास शास्त्री – मृच्छकटिकम्–शूद्रक
- डॉ0 गङ्गासागर राय – मालती माधवम् भवभूति प्रणीतम्
- आचार्य श्री रामचन्द्र मिश्रः – महावीरचरितम्–भवभूति
- आचार्य शेषराजशर्मा रेम्मीः – प्रसन्नराघवम्–जयदेवप्रणीतम्
- डॉ0 कपिल देव द्विवेदी – उत्तररामचरितम् भवभूति प्रणीतम्
- परमेश्वरदीन पाण्डेय – विक्रमोर्वशीयम–कालिदास रचित
- डॉ0 शिवराज शास्त्री – रत्नावली–श्रीहर्षदेवविरचित
- डॉ0 श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी – दशकुमार चरितम् दण्डिप्रणीतम्